

अध्याय 1: मानव जिज्ञासा और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान

परिचय

मानव जिज्ञासा प्राचीन काल से बौद्धिक प्रयासों की नींव रही है, जो मनुष्यों को अपने परिवेश का अन्वेषण, प्रश्न और समझने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, जिज्ञासा केवल एक सहज प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह एक संरचित कार्यप्रणाली है, जिसका उद्देश्य मानव व्यवहार, सामाजिक संरचनाओं और अंतःक्रियाओं को समझना है (गिडेंस, 1991)। सामाजिक विज्ञान में मानव जिज्ञासा का अध्ययन समाज, शासन, अर्थशास्त्र और मानव मनोविज्ञान से जुड़े मौलिक प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करता है, जिसमें अनुभवजन्य और सैद्धांतिक दोनों दृष्टिकोण शामिल होते हैं। यह अध्याय वैज्ञानिक विधि, अनुसंधान पद्धतियों, ज्ञानमीमांसीय बहसों, चुनौतियों और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के व्यापक अनुप्रयोगों की व्याख्या करता है।

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि

वैज्ञानिक विधि प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान दोनों में व्यवस्थित ज्ञान उत्पादन की आधारशिला है। यह अवलोकन, प्रश्न निर्माण, परिकल्पना विकास, डेटा संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष जैसे चरणों का पालन करती है (बैबी, 2020)। प्राकृतिक विज्ञानों के विपरीत, जहां प्रयोगात्मक नियंत्रण अक्सर संभव होता है, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान मानव व्यवहार से संबंधित होता है, जो स्वाभाविक रूप से अप्रत्याशित और सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और परिस्थितिजन्य संदर्भों से प्रभावित होता है।

डरखाइम (1897) का आत्महत्या पर किया गया अध्ययन सामाजिक घटनाओं पर वैज्ञानिक विधि लागू करने का प्रारंभिक उदाहरण है। उन्होंने मात्रात्मक विधियों का उपयोग करके सामाजिक एकीकरण और आत्महत्या दरों के बीच संबंध स्थापित किया, जिससे यह प्रदर्शित हुआ कि सामाजिक विज्ञान अनुसंधान मानव व्यवहार में पैटर्न और संबंधों को उजागर कर सकता है। हालांकि, भौतिकी या रसायन विज्ञान की कठोर संरचनाओं के विपरीत, सामाजिक विज्ञान व्याख्यात्मक ढांचों पर निर्भर करता है, जो अक्सर मात्रात्मक दृष्टिकोणों के साथ गुणात्मक विधियों को भी अपनाता है (ब्रायमैन, 2016)।

सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिकता (साइंटिज़्म) पर बहस

यह बहस कि क्या सामाजिक विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान की विधियों का पालन करना चाहिए, इस क्षेत्र में ज्ञानमीमांसीय चर्चाओं का एक केंद्रीय विषय रहा है। वैज्ञानिकता (साइंटिज़्म) वह विचारधारा है जो यह मानती है कि सामाजिक विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान के समान विधियों और सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। इस दृष्टिकोण का समर्थन सकारात्मकतावादियों (पॉज़िटिविस्ट्स) जैसे ऑगस्ट कॉम्टे और बाद में व्यवहारवादियों (बिहेवियरलिस्ट्स) ने किया, जिन्होंने अनुभवजन्य वस्तुनिष्ठता (एम्पिरिकल ऑब्जेक्टिविटी) को प्राथमिकता दी। एल. एन. शर्मा (1979) इस दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए तर्क देते हैं कि वैज्ञानिक जांच के अपने लाभ हैं, लेकिन मात्रात्मक विधियों पर अत्यधिक निर्भरता सामाजिक विज्ञान की मानव अंतःक्रियाओं की जटिलता को पूरी तरह से समझने की क्षमता को सीमित कर देती है।

शर्मा ने यह भी बताया कि व्यवहारवादी आंदोलन, जो तर्कसंगत सकारात्मकतावाद (लॉजिकल पॉज़िटिविज़्म) से अत्यधिक प्रभावित था, ने अनुभववाद, मात्रात्मकता और वस्तुनिष्ठता को प्राथमिकता देकर सामाजिक विज्ञानों को पुनर्गठित करने का प्रयास किया। इसने पद्धति संबंधी प्रगति की ओर तो अग्रसर किया, लेकिन साथ ही मूल्यों, व्यक्तिपरक अनुभवों और ऐतिहासिक संदर्भों के बहिष्करण से संबंधित ज्ञानमीमांसीय चिंताओं को भी जन्म दिया। वैज्ञानिकता की आलोचना यह इंगित करती है कि अनुभवजन्य कठोरता आवश्यक है, लेकिन मानव अनुभव की विशिष्ट प्रकृति सामाजिक विज्ञान में अधिक लचीले और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की मांग करती है।

गुणात्मक, मात्रात्मक और मिश्रित-पद्धति अनुसंधान

सामाजिक विज्ञान अनुसंधान मानव व्यवहार और सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए विभिन्न पद्धतियों को अपनाता है।

गुणात्मक अनुसंधान

गुणात्मक अनुसंधान मानव अंतःक्रियाओं को आकार देने वाले अनुभवों, अर्थों और सामाजिक संदर्भों पर ध्यान केंद्रित करता है (डेनज़िन और लिंकन, 2018)। नृवंशविज्ञान (एथनोग्राफी), गहन साक्षात्कार और केस स्टडी जैसी विधियां शोधकर्ताओं को जटिल सामाजिक वास्तविकताओं की खोज करने की अनुमति देती हैं। उदाहरण के लिए, क्लिफर्ड गीर्टज़ (1973) के बालिनी मुर्गा लड़ाई

(Balinese Cockfighting) पर किए गए नृवंशविज्ञान कार्य ने अनुष्ठानों और सामूहिक पहचानों के सांस्कृतिक महत्व को उजागर किया।

मात्रात्मक अनुसंधान

मात्रात्मक अनुसंधान सामाजिक घटनाओं को मापने के लिए सांख्यिकीय उपकरणों, सर्वेक्षणों और प्रयोगात्मक डिजाइनों का उपयोग करता है (क्रेसवेल और क्रेसवेल, 2018)। यह शोधकर्ताओं को पैटर्न, सहसंबंध और कारणों की पहचान करने की अनुमति देता है। राजनीतिक वैज्ञानिक अक्सर मतदान व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करते हैं, जैसे कि अमेरिकन नेशनल इलेक्शन स्टडीज (ANES), जो समय के साथ जनमत प्रवृत्तियों को ट्रैक करता है (कैम्बेल एट अल., 1960)।

मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण

मिश्रित-पद्धति अनुसंधान गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है ताकि सामाजिक घटनाओं की अधिक व्यापक समझ प्राप्त की जा सके (ताशक्कोरी और टेडली, 2010)। उदाहरण के लिए, अपराध दरों पर एक अध्ययन पुलिस रिपोर्टों का मात्रात्मक विश्लेषण कर सकता है और पुलिस अधिकारियों के साक्षात्कारों के माध्यम से गुणात्मक संदर्भ प्राप्त कर सकता है। यह दृष्टिकोण एकल पद्धतियों की कमजोरियों को कम करता है और निष्कर्षों की वैधता को बढ़ाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान समाज की समझ और सुधार के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। कठोर अनुसंधान पद्धतियों—गुणात्मक, मात्रात्मक, और मिश्रित-पद्धति—के माध्यम से सामाजिक वैज्ञानिक शासन, आर्थिक नीतियों, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय को सूचित करने वाले ज्ञान में योगदान करते हैं। हालांकि, पक्षपात, नैतिकता और मानव व्यवहार की अप्रत्याशितता की चुनौतियां अनुसंधान दृष्टिकोणों के निरंतर परिष्करण की आवश्यकता बनाती हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ती है, बड़े डेटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतःविषय सहयोग सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के भविष्य को आकार देंगे (मेयर-शॉनबर्गर और कुकियर, 2013)।

